(3)

Lectur series No:- 48.

online class.
Date- 20/5/2020
Time- 10: to 10:50 A.M

TOPIC,

(1.) No soul.

Dr. Surita Kumari
Department of philosophy.
B.A part-I
Paper-I (H.)
A.N.D. College Shahpur
Patory, Samastipur.

Ans:-) वैशेषिक दर्शन में आत्मा उसी सत्ता को कहा जाता है, जो चैतन्य का आधार है। :→

वैशेषिक ने दो प्रकार की आत्माओं को माना है।:—

(1) जीवात्मा (Individual Soul)
(2.) परमात्मा (Supreme Soul)।

जीवात्मा की चेतन सीमित है जबकि परमात्मा की चेतना असिम मानी असीमित है। जीवात्मा अनेक हैं जबकि परमात्मा एक है। परमात्मा ईश्वर का ही दूसरा नाम है।

ज्ञान सुख। वैशेषिक के अनुसार ज्ञान सुख, दुःख, इच्छा

P.T.O

धर्म, अधर्म इत्यादि आत्मा के विशेष गुण हैं। जीवात्मा अनेक है। जितने शरीर, उतनी ही जीवात्मा होती हैं। प्रत्येक जीवात्मा में मन का निवास होता है। जिसके कारण उसकी विशिष्टता विद्यमान रहती है।

आत्मा की अनेकता को वैशेषिक ने जीवात्माओं की अवस्थाओं में भिन्नता के आधार पर सिद्ध किया है, कुछ जीवात्मा सुखी हैं कुछ दुःखी हैं।

कुछ धनवान हैं और कुछ निर्धन हैं। ये विभिन्न अवस्थाएँ अनेक आत्माएँ को प्रस्तावित करती हैं।

वैशेषिक के अनुसार आत्मा अमर है, यह अनादि और अनंत है।

आत्मा की चेतना यानी आत्मा का गुण आत्मा का ज्ञाता को

P.T.O.

3.

प्रमाणित करने के लिए वैशेषिक ने कुछ युक्तियों का उपयोग किया है।

(1) प्रत्येक गुण का कुछ न कुछ आधार होता है।

चैतन्य एक गुण है। इस गुण का आश्रय शरीर, मन और इन्द्रिय नहीं हो सकता। इस गुण और आश्रय आत्मा है। न्याय की तरह वैशेषिक भी चेतन को आत्मा का आगन्तुक गुण मानते हैं।

जिस प्रकार व्यवहारिक चीजों का व्यवहार करने के लिए व्यक्ति की आवश्यता होती है। उसी प्रकार आँख, नाक आदि विभिन्न इन्द्रियों का उपयोग करने वाली आत्मा है। (2.) प्रत्येक व्यक्ति के सुख और दुःख, पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि आकाश, दिक् और काल के गुण etc.

(End)